13 वर्ष (2013-2025)

आईएएस मुख्य परीक्षा

सामान्य अध्ययन

प्रश्न-पत्र IV प्रश्नोत्तर रूप में

विगत वर्ष (PYQ) अध्यायवार हल प्रश्न-पत्र

इन प्रश्न-पत्रों का हल यूपीएससी सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के सामान्य अध्ययन पाठ्यक्रम के अनुरूप किया गया है। यह पुस्तक सभी राज्य लोक सेवा आयोगों द्वारा आयोजित परीक्षाओं एवं अन्य समकक्ष परीक्षाओं हेतु भी समान रूप से उपयोगी हैं।

संपादकः एन. एन. ओझा

हलः क्रॉनिकल संपादकीय समूह

CHRONICLE
Nurturing Talent Since 1990

13 वर्ष (2013-2025)

आईएएस मुख्य परीक्षा

सामान्य अध्ययन

प्रश्न-पत्र IV प्रश्नोत्तर रूप में

विगत वर्ष (PYQ) अधयायवार हल प्रश्न-पत्र

बुक कोडः 483

संस्करण 2026

मूल्यः ₹190

ISBN : 978-81-995968-2-5

प्रकाशक

क्रॉनिकल पब्लिकेशंस प्रा. लि.

कॉरपोरेट ऑफिसः

ए-1डी, सेक्टर-16, नोएडा-201301 (उ.प्र.)
फोन नं. : 0120-2514610, मो. नं. : 9999056644
E-mail : info@chronicleindia.in

सर्वाधिकार सुरक्षित © क्रॉनिकल पब्लिकेशंस प्रा. लि.: इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रतिलिपिकरण, ऐसे यंत्र में भंडारण जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानान्तरण, किसी भी रूप में या किसी भी विधि से- इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी और ढंग से, प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता।

पुस्तक में प्रकाशित सामग्री उपरोक्त विषय पर प्रकाशित पुस्तकों/जर्नल/रिपोर्ट/ ऑनलाइन कंटेंट आदि से संकलित है। लेखक/संकलनकर्ता/प्रकाशक, प्रकाशित सामग्री की मूल लेखन का दावा नहीं करता। प्रकाशित सामग्री को पूर्णतः त्रुटि रहित बनाने का प्रयास किया गया है, फिर भी किसी भी प्रकार के त्रुटि के लिए क्षतिपूर्ति का दावा प्रकाशक/लेखक द्वारा स्वीकार नहीं किया जाएगा। शंका की स्थिति में पाठक स्वयं भारत सरकार के दस्तावेज व अन्य स्रोतों के माध्यम से जांच कर सकते हैं
सभी विवादों का निपटारा दिल्ली न्यायिक क्षेत्र में होगा।

अनुक्रमणिका

सामान्य अध्ययन

चतुर्थ प्रश्न-पत्र

1. नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि.....1-72

2. केस स्टडी.....73-144

यूपीएससी सिविल सेवा मुख्य परीक्षा

पाठ्यक्रम

सामान्य अध्ययन -IV

नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि (Ethics, Integrity and Aptitude)

इस प्रश्न-पत्र में ऐसे प्रश्न शामिल होंगे जो सार्वजनिक जीवन में उम्मीदवारों की सत्यनिष्ठा, ईमानदारी से संबंधित विषयों के प्रति उनकी अभिवृत्ति तथा उनके दृष्टिकोण तथा समाज से आचार-व्यवहार में विभिन्न मुद्दों तथा सामने आने वाली समस्याओं के समाधान को लेकर उनकी मनोवृत्ति का परीक्षण करेंगे। इन आयामों का निर्धारण करने के लिए प्रश्न-पत्रों में किसी मामले के अध्ययन (केस स्टडी) का माध्यम भी चुना जा सकता है। मुख्य रूप से निम्नलिखित क्षेत्रों को कवर किया जाएगा।

- **नीतिशास्त्र तथा मानवीय सह-संबंध:** मानवीय क्रियाकलापों में नीतिशास्त्र का सार तत्व, इसके निर्धारक और परिणाम: नीतिशास्त्र के आयाम; निजी और सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र। मानवीय मूल्य-महान नेताओं, सुधारकों और प्रशासकों के जीवन तथा उनके उपदेशों से शिक्षा; मूल्य विकसित करने में परिवार, समाज, और शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका।

- **अभिवृत्तिः** सारांश (कंटेन्ट), संरचना, वृत्ति; विचार तथा आचरण के प्ररिप्रेक्ष्य में इसका प्रभाव एवं संबंध; नैतिक और राजनीतिक अभिरुचि; सामाजिक प्रभाव और धारणा।
- सिविल सेवा के लिए अभिरुचि तथा बुनियादी मूल्य, सत्यनिष्ठा, भेदभाव रहित तथा गैर-तरफदारी, निष्पक्षता, सार्वजनिक सेवा के प्रति समर्पण भाव, कमजोर वर्गों के प्रति समानुभूति, सहिष्णुता तथा संवेदना।
- **भावनात्मक समझः** अवधारणाएं तथा प्रशासन और शासन व्यवस्था में उनके उपयोग और प्रयोग।
- भारत तथा विश्व के नैतिक विचारकों तथा दार्शनिकों के योगदान।
- **लोक प्रशासनों में लोक/सिविल सेवा मूल्य तथा नीतिशास्त्रः** स्थिति तथा समस्याएं; सरकारी तथा निजी संस्थानों में नैतिक चिंताएं तथा दुविधाएं; नैतिक मार्गदर्शन के स्रोतों के रूप में विधि, नियम, विनियम तथा अंतर्रात्मा; शासन व्यवस्था में नीतिपरक तथा नैतिक मूल्यों का सुदृढ़ीकरण; अंतरराष्ट्रीय संबंधों तथा निधि व्यवस्था (फंडिंग) में नैतिक मुद्दे; कॉरपोरेट शासन व्यवस्था।
- **शासन व्यवस्था में ईमानदारीः** लोक सेवा की अवधारणा; शासन व्यवस्था और ईमानदारी का दार्शनिक आधार, सरकार में सूचना का आदान-प्रदान और पारदर्शिता, सूचना का अधिकार, नीतिपरक आचार संहिता, आचरण संहिता, नागरिक घोषणा पत्र, कार्य संस्कृति, सेवा प्रदान करने की गुणवत्ता, लोक निधि का उपयोग, भ्रष्टाचार की चुनौतियां।
- उपर्युक्त विषयों पर मामला संबंधी अध्ययन (केस स्टडी)।

ॐ❖ॐ

1 नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि

प्र. मौजूदा डिजिटल युग में सोशल मीडिया ने संचार और बातचीत के तरीके में क्रांति ला दी है। हालांकि इसने कई नैतिक मुद्दे और चुनौतियां खड़ी कर दी हैं। इस सन्दर्भ में मूल नैतिक दुविधाओं का वर्णन कीजिए।

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2025)

उत्तर: सोशल मीडिया ने संचार में क्रांति ला दिया है, जिसके कारण त्वरित और असीमित वैश्विक संवाद संभव हुआ है। लेकिन इसके साथ ही यह कई नैतिक चिंताएं भी उत्पन्न करता है, जैसे-भ्रामक जानकारी, गोपनीयता का उल्लंघन, घृणास्पद भाषण, साइबर बुलिंग और जनमत के साथ छेड़छाड़।

इस संदर्भ में प्रमुख नैतिक दुविधाएं:

- सहज संचार सोशल मीडिया प्रोफाइल में व्यक्तिगत जानकारी के एकीकरण से संभव होता है। लेकिन बिना सहमति के व्यक्तिगत डेटा का संग्रहण डेटा-सुरक्षा के नियमों का उल्लंघन करता है।
- उपयोगकर्ताओं द्वारा साझा किए गए डेटा पर नियंत्रण का संघर्ष कंपनियों के लाभ की इच्छा से होता है, जो लक्षित विज्ञापनों के माध्यम से पैसा कमाती हैं।
- तेजी से सूचना का प्रसार सोशल मीडिया को उपयोगकर्ता के अनुकूल बनाता है, लेकिन इसी गति के कारण जानकारी की सटीकता और सत्यापन सुनिश्चित करना चुनौती बन जाता है।
- सोशल मीडिया द्वारा दी जाने वाली जानकारी कई बार राज्यों की सुरक्षा और कानून-व्यवस्था बनाए रखने में बाधा उत्पन्न करती है।
- त्वरित संचार और निरंतर संपर्क समुदायों को जोड़ते हैं, लेकिन निरंतर उपयोग आत्म-नियंत्रण और मानसिक स्वास्थ्य के लिए चुनौती बन सकता है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म कई बार सामाजिक जिम्मेदारी की कीमत पर 'एंगेजमेंट' और 'ग्रोथ' को प्राथमिकता देते हैं।
- जहां सोशल मीडिया अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बढ़ावा देता है, वहीं घृणास्पद सामग्री सामाजिक सद्भाव को बाधित कर सकती है।
- सोशल मीडिया बहुसांस्कृतिक संवाद को प्रोत्साहित करता है, लेकिन इसके साथ ही स्थानीय विविधता के दबने और प्रभुत्वशाली मूल्यों के बढ़ने का जोखिम भी रहता है। एकसमान नीतियां सांस्कृतिक भिन्नताओं और स्थानीय परिप्रेक्ष्य का पर्याप्त रूप से ध्यान नहीं रख सकतीं।

निष्कर्ष: इन नैतिक दुविधाओं का समाधान एक सतत और नैतिक दृष्टिकोण की मांग करता है, ताकि एक जिम्मेदार सोशल मीडिया पारिस्थितिकी तंत्र विकसित हो सके। इसके लिए अधिकारों, कर्तव्यों, मानसिक स्वास्थ्य और राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे पहलुओं के बीच संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता है।

प्र. "संवैधानिक नैतिकता कोई स्वाभाविक मनोभाव नहीं है, बल्कि नागरिक शिक्षा और कानून के शासन के पालन का परिणाम है।" सिविल सेवक के लिए संवैधानिक नैतिकता का परीक्षण करते हुए लोक प्रशासन में सुशासन को बढ़ावा देने और जवाबदेही सुनिश्चित करने में इसकी भूमिका पर प्रकाश डालिए। (सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2025)

उत्तर: संवैधानिक नैतिकता उन मूल्यों और सिद्धांतों को आत्मसात करने से विकसित होती है, जो हमारे संविधान का प्रतिनिधित्व करते हैं। कानून का पालन करना इसी प्रतिबद्धता का एक प्रमुख रूप है।

लोक सेवक के लिए संवैधानिक नैतिकता का महत्व

- कानून की सर्वोच्चता को बनाए रखना, यह सुनिश्चित करना कि प्रशासनिक कार्यवाही कानूनी और गैर-मनमानी हो। इससे शासन में जनता का विश्वास बढ़ता है और सरकारी कार्यों की खुली समीक्षा भी संभव होती है।
  - **उदाहरण:** अतिक्रमण हटाने में विधिक प्रावधानों का पालन करना।
- सभी नागरिकों के साथ समान व्यवहार, चाहे उनका धर्म, जाति, लिंग या राजनीतिक झुकाव कुछ भी हो। यह शासन में समावेशन सुनिश्चित करता है और सरकार को अंतिम व्यक्ति तक जवाबदेह बनाता है।
- संवैधानिक नैतिकता सच्ची जनसेवा की भावना को बढ़ाती है। यह असमानताओं को कम करने और सबके लिए न्याय को बढ़ावा देने की दिशा में सक्रिय कार्य को प्रोत्साहित करती है। इससे सेवा-प्रदाय और पारदर्शी प्रणाली का विकास होता है।
  - **उदाहरण:** सार्वजनिक सेवाओं की पहुंच घर- घर तक हो।
- लोकतांत्रिक संस्थाओं और प्रक्रियाओं का सम्मान, जिसमें शक्तियों का विभाजन और विकेंद्रीकरण शामिल है। जैसे-जैसे शक्तियां निचले स्तर पर हस्तांतरित होती हैं, विकास के लक्ष्य तेजी से पूरे होते हैं।
  - **उदाहरण:** पुलिस द्वारा जमानत आदेशों का त्वरित क्रियान्वयन।
- सभी आधिकारिक कार्यों में उच्च स्तर की नैतिकता, ईमानदारी और सत्यनिष्ठा का पालन संवैधानिक नैतिकता का मूल है। यह भ्रष्टाचार और हितों के टकराव को रोकती है।
- समाज में बाधाओं को समाप्त कर सामाजिक सुधारों को आगे बढ़ाने में यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शासन प्रगतिशील होना चाहिए और सामाजिक परिवर्तन का उत्प्रेरक बनना चाहिए।
  - **उदाहरण:** समलैंगिकता को अपराध की श्रेणी से बाहर करने का सुप्रीम कोर्ट का निर्णय (नवतेज सिंह जौहर बनाम भारत सरकार, 2018)।

2

केस स्टडी

प्र. विजय पिछले दो वर्षों से देश के पहाड़ी उत्तरी राज्य के दूरदराज जिले के डिप्टी कमिश्नर थे। अगस्त महीने में पूरे राज्य में भारी बारिश हुई और इसके बाद उक्त जिले के ऊपरी इलाकों में बादल फट गए। पूरे राज्य में विशेषकर कर प्रभावित जिले में बहुत भारी क्षति हुई। पूरा सड़क नेटवर्क और दूरसंचार बाधित हो गया। इमारतें बड़े पैमाने पर क्षतिग्रस्त हो गईं। लोगों के घर टूट गए, और वे खुले में रहने को मजबूर हुए। 1200 से अधिक लोग मारे गए और लगभग 5000 लोग बुरी तरह घायल हो गए। विजय के नेतृत्व में नागरिक प्रशासन सक्रिय हो गया और बचाव तथा राहत अभियान शुरू हो गया। बेघर और घायल लोगों को आश्रय एवं चिकित्सकीय सुविधाएं प्रदान करने के लिए अस्थायी आश्रय शिविर तथा अस्पताल स्थापित किए गए। दूरदराज के इलाकों से बीमार और बूढ़े लोगों को निकालने के लिए हेलीकॉप्टर सेवाएं शुरू की गईं। विजय को अपने गृह नगर केरल से संदेश मिला कि उनकी माँ गंभीर रूप से बीमार हैं। दो दिन बाद विजय को दुर्भाग्यपूर्ण संदेश मिला कि उनकी माँ की मृत्यु हो गई है। विजय का एक बड़ी बहन के अलावा कोई करीबी रिश्तेदार न था। उनकी बड़ी बहन अमेरिकी नागरिक थी और पिछले कई वर्षों से वहीं रह रही थी।

इस बीच पांच दिनों के अंतराल के बाद फिर से शुरू हुई भारी वर्षा के कारण प्रभावित जिले में स्थिति और खराब हो गई। वहीं, उनका मोबाइल पर उनके गृह नगर से माँ का अंतिम संस्कार करने के लिए जल्द से जल्द पहुँचने के लगातार संदेश आ रहे थे।

(a) विजय के पास कौन से विकल्प उपलब्ध हैं?

(b) विजय को किन नैतिक दुविधाओं का सामना करना पड़ रहा है?

(c) विजय द्वारा पहचाने गए प्रत्येक विकल्प का आलोचनात्मक मूल्यांकन और परीक्षण कीजिए।

(d) आपके अनुसार विजय के लिए कौन सा विकल्प अपनाना सबसे उपयुक्त होगा और क्यों?

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2025)

उत्तर: विजय उपर्युक्त स्थिति में एक लोक सेवक और पुत्र के रूप में अपने कर्तव्यों के बीच नैतिक संघर्ष का सामना कर रहे हैं। अपनी मां के निधन के बाद भावनात्मक संकट में एक संतुलित समाधान खोजना चुनौतीपूर्ण होगा।

(a) विजय के लिए उपलब्ध विकल्प

- प्रभावित जिले में रहकर राहत और बचाव कार्यों का व्यक्तिगत रूप से नेतृत्व करना।
- राहत कार्य को सक्षम अधीनस्थों को सौंपकर केरल में अपनी मां के अंतिम संस्कार के लिए चले जाएं।
- अस्थायी अवकाश लेने का अनुरोध करना और परिस्थितियों की स्पष्ट निगरानी और संचार के माध्यम से दूर से संचालन करना।
- बड़ी बहन और अन्य दूर के रिश्तेदारों से अंतिम संस्कार कराने का अनुरोध करना।

(b) विजय के सामने नैतिक दुविधाएँ

- **जनता के प्रति कर्तव्य बनाम व्यक्तिगत शोक:** जीवन बचाने और आपदा प्रबंधन के लिए कर्तव्यों का पालन करते हुए गहरे व्यक्तिगत पारिवारिक शोक का सामना करना।
- **नेतृत्व जिम्मेदारी बनाम मानवीय करुणा:** जिले के प्रशासन के प्रमुख अधिकारी के रूप में शारीरिक रूप से उपस्थित रहना या पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाना।
- **पीड़ितों के अधिकार बनाम मां के सम्मानजनक अंतिम संस्कार का अधिकार:** दु:खी जनता की जरूरतों को प्राथमिकता देना बनाम सांस्कृतिक और भावनात्मक दृष्टि से मां का अंतिम संस्कार करना।
- **सार्वजनिक बनाम गोपनीयता:** व्यक्तिगत संघर्षों के बारे में जानकारी साझा करना सार्वजनिक विश्वास बनाए रखने के लिए आवश्यक हो सकता है, लेकिन यह एक गहरे व्यक्तिगत क्षण में निजी जीवन को मीडिया की नजरों में ला सकता है।

(c) प्रत्येक विकल्प का आलोचनात्मक मूल्यांकन

1. जिले में रहकर राहत कार्यों का नेतृत्व करना
   - **लाभ:** संकट के दौरान मजबूत नेतृत्व राहत कार्यों की प्रभावशीलता और मनोबल में सुधार करता है।
   - **नुकसान:** व्यक्तिगत भावनात्मक तनाव निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित कर सकता है; पारिवारिक कर्तव्यों का निर्वाह नहीं हो सकता।
2. राहत कार्यों को सौंपकर केरल के लिए रवाना होना
   - **लाभ:** पारिवारिक कर्तव्य को पूरा करता है; भावनात्मक बोझ कम करता है।
   - **नुकसान:** नेतृत्व में शून्य हो सकता है; कार्य में कुछ कमी आ सकती है।